VOL- VII ISSUE- VI JUNE 2020 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 6.293 ISSN 2349-638x

'भ्रष्टाचार के सैनिक' व्यंग्य संकलन में चित्रित राजनीतिक व्यंग्य

प्रा. नितिन विट्ठल पाटिल
विट्ठलराव पाटील महाविद्यालय,कले

आधुनिक मानव जीवन पर राजनीतिक परिस्थितियों का काफी गहरा प्रभाव दिखाई दे रहा है। भारतीय राजनीतिक माहौल की गंदगी से आम आदमी परेशान हो चुका है। आजाद भारत को लेकर लोगों ने जो सपने संजोए थे, वे सब धीरे-धीरे धाराशाही होने लगे हैं।राजनीति को एक करियर के रूप में देखा जाने लगा है। स्वार्थी राजनीति के चलते देश की अवस्था दिन-ब-दिन बिगड़ती चली जा रही है। हमारे देश सेवक जनता को दोनों हाथों से लूटने का काम कर रहे हैं। देशसेवा के बदले पारिवारिक सेवा को नेता लोग महत्व दे रहे हैं। देशसेवा केवल भाषणबाजी तक सीमित रह चुकी है। नेता लोग सफेदपोश में काले धंधे करने में माहिर हो चुके हैं। सत्ता प्राप्ति के लिए हमारे नेता वर्ग नैतिक मूल्यों का हनन करते हुए दिखाई दे रहे हैं। हमारी राजनीति केवल चुनावी राजनीति तक सीमित रह चुकी है। हमारे नेता लोकतंत्र का गलत ढंग से इस्तेमाल कर रहे हैं। हिंदी व्यंग्य साहित्य के अंतर्गत भारतीय राजनीति को लेकर बहुत सारे व्यंग्य लिखे जा चुके हैं। आज के आधुनिक व्यंग्य साहित्य में राजनीतिक विकृतियों का पर्दाफाश करने में प्रेम जनमेजय जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन्होंने अपने व्यंग्य साहित्य के माध्यम से राजनीतिक चालबाजीयों की धज्जियां उड़ाई है।

'भ्रष्टाचार के सैनिक' यह व्यंग्य रचना प्रेम जनमेजय जी द्वारा लिखी हुई है । इस व्यंग्य रचना के अंतर्गत प्रेम जनमेजय जी ने राजनीतिक विसंगतियों पर व्यंग्य के अत्यंत कठोर प्रहार किए हैं। अपने राजनीतिक व्यंग्यों के माध्यम से भारतीय जनता के चेतना को जागृत करने का काम जनमेजय जी ने किया है। इनके व्यंग्य पाठक को सोचने के लिए मजबूर कर देते हैं। हमारे देशसेवक कहे जानेवाले नेता अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए राजनीति का इस्तेमाल करते हैं। राजनीति के सहारे धन बटोरना इनका एकमात्र उद्देश्य रहा है। भ्रष्टाचार के सहारे ही नेतावर्ग राजनीति में अपना अलग स्थान प्राप्त कर लेता है।आज राजनीति में आने से पहले भ्रष्टाचार को खत्म करने की बातें करते हैं, लेकिन वही नेता चुनाव जीतने के बाद भ्रष्टाचार को गले लगाकर अलग-अलग ऊंचाइयों को छूने की कोशिश करते हैं । राजनीति में जो जितना भ्रष्ट और नैतिकता विहीन है उसको ही सबसे ज्यादा अवसर प्राप्त होते हैं। इस संबंध में व्यंग्य करते हुए प्रेम जनमेजय जी लिखते हैं-" भारत की आन है प्रजातंत्र, भारत की शान है उसके योद्धा। धन्य है वह सैनिक जो भ्रष्टाचार के द्वारा, भ्रष्टाचार के और भ्रष्टाचार के लिए हैं। धन्य हैं वे जिन्हें देख कपड़े पहनने वाले को शर्म आती है। हम उनके जज्बे और नंगई के साहस को सलाम करते हैं"[1]इस तरह राजनीति में भ्रष्टाचार को अपना नैतिक अधिकार समझा जाने लगा है। इस विकृत मानसिकता के चलते हमारे नेताओं ने पूरे देश को बर्बाद करके रख दिया है। राजनीति को अपनाते ही हमारे नेता लोग देश को लूटने पाटने की कला को अपने आप विकसित कर लेते हैं।इस कला के कारण ही हमारे नेता राजनीति में अपना दबदबा कायम रखते हैं।इस तरह इस व्यंग्य रचना में राजनीतिक भ्रष्टाचार की पोल खोलने का काम जनमेजय जी ने किया है।

राजनीति का वास्तविक लक्ष्य आम आदमी का विकास करके देश को मजबूत बनाना है।किंतु आज हमारे नेतागण खुद का विकास करके देश को अंदर से खोखला करने का काम कर रहे हैं। वास्तव में हमारे प्रजातंत्रीय व्यवस्था के अनुसार नेतावर्ग देश के सेवक होते हैं, किंतु आज हम देखते हैं कि सेवक ही आज देश के मालिक बन बैठे हैं। इन विपरीत परिस्थितियों के ऊपर प्रेम जनमेजय जी नेअत्यंत मार्मिक रूप में व्यंग्य करते हुए लिखा है-" आजकल उलटबांसी ही चलती है, कबीर जी। स्वामी बनाने वाला एक दिन का वोटर, सेवक है और पाँच वर्ष की सेवा के लिए नियुक्त किया गया सेवक स्वामी है।"[2] जनता को केवल स्वामी होने का भ्रम पैदा किया जाता है, वास्तविक स्थिति कुछ अलग ही है। आए दिन हमारी भारतीय राजनीति स्वार्थ के दलदल में फंसती चली जा रही है। राजनीति से

नीति शब्द का कोई संबंध नहीं रहा है। भारत के नेता लालची वृत्ति को अपनाकर अपना स्वार्थ साधने में लगे हुए हैं। इस घटिया और संकुचित मानसिकता के कारण आम आदमी दर-दर की ठोकरें खा रहा है। इन विसंगत स्थितियों के ऊपर जनमेजय जी ने व्यंग्य के अत्यंत तीखे प्रहार किए हैं। नेताओं के स्वार्थी वृत्ति का पर्दाफाश करते हुए जनमेजय जी ने लिखा है-" सुनो जनमेजय! तुम तो जानते ही हो कि कुत्तों का मानव जीवन में कितना महत्व है। जैसे खान पान का वैभव लक्ष्मी माता की कृपा के बिना नहीं आता वैसे ही सत्ता का सुख इनके बिना नहीं आ पाता है। एक हड्डी की प्रतीक्षा में यह आपकी रक्षा करते हैं, मनोरंजन करते हैं और हुश कहने पर, बिना सोचे समझे किसी को भी फाड़ सकते हैं।"[3] इस तरह अपने व्यंग्य कुशलता के माध्यम से जनमेजय जी ने लोककल्याण की आड़ में हमारे जनसेवक किस तरह अपने स्वार्थों को पूरा करते हैं, इसकी तरफ जनता का ध्यान खींचने का काम किया है। भारत के नेता रक्षक से भक्षक बने हुए हैं। अपने पैसों के लालच के चलते पूरे देश को हजम करने में नेतावर्ग जुटे हुए हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले के हमारे देशसेवकों ने देश को आजाद करने के लिए अपनी जान की बाजी लगायी। कभी भी उन्होंने देश प्रेम के आड़ में स्वार्थ पूर्ति का काम नहीं किया। लेकिन आज के नेता हमारे सामने स्वार्थ के चिकने पुतले बनकर खड़े हुए हैं। इस संबंध में भेरूंलाल गर्ग जी ने भी भारतीय नेताओं के ऊपर निशाना साधते हुए लिखा है-" देश की स्वतंत्रता के साथ जिन नेताओं के हाथों देश की बागडोर सौंपी गई, वे स्वयं अपने दायित्व से हट गए। अब तक सच्चरित्र साधु, आदर्शवादी और लोकनेता कहकर जिनकी पूजा कर रहे थे, वे दुराचारी, स्वार्थलोलुप और घूसखोर बन गए। चारों तरफ जातिवाद, कालाबाजारी, बेईमानी और स्वार्थपरता का साम्राज्य फैल गया। आशावादी भारतीय समाज का भ्रम टूटा, अपने ही से हम पराए हो गए।"[4]

हमारे देश में चुनाव को अत्यंत महत्वपूर्ण रूप में देखा जाता है। हमारे लोकतांत्रिक व्यवस्था के अनुसार हमें अपना नेता चुनने का पूर्ण रूप से अधिकार दिया गया है। किंतु यह अधिकार केवल दिखावा और छलमात्र है, वास्तविक परिस्थितियाँ कुछ अलग ही है। आज भी कुछ लोग इस चुनाव प्रक्रिया को आदर्शवादी दृष्टि से देखते हैं। चुनावी प्रक्रिया के माध्यम से बहुत सारी राजनीतिक पार्टियाँ अपना उल्लू साध्य करते हुए दिखाई देती है। हमारे देश का आम आदमी असहाय जिंदगी बीता रहा है। केवल चुनाव के वक्त राजनीतिक पार्टियाँ आम आदमी की तरक्की के संबंध में बड़े जोर शोर के साथ बातें करते हैं। चुनावी माहौल में झोपड़ियों में कीचड़नुमा जिंदगी जीनेवाले गरीब लोगों के साथ हमारे नेता प्यार भरा व्यवहार दिखाते हैं। इस संबंध में प्रेम जनमेजय जी "मेढकों का आकाश" इस व्यंग्य निबंध में व्यंग्य के कठोर प्रहार करते हुए लिखते हैं- "चुनाव का वसंत हो तो पिछड़ा गांव हो या पिछड़े जन, गुलो गुलजार हो जाते हैं। और वसंत के जाते ही गरीबी का पतझड़ छा जाता है।"[5] इस तरह राजनीति में जनता का हित केवल दिखावा मात्र है। केवल सत्ता का सुख भोगना ही इनका एकमात्र उद्देश्य है। चुनाव के समय ही हमारे राजनेताओं को देशभक्ति की याद आती है। चुनाव के समय बहुत सारे भ्रम लोगों में पैदा किए जाते हैं। हमारी निरीह जनता भी नेताओं के इस जाल में फंस जाती है। चुनाव के वक्त हमारे देश में हर नेता आश्वासनों की गठरी लेकर घूमता हुआ नजर आता है। इन परिस्थितियों के लिए जनमेजय जी ने नेताओं के साथ जनता को भी दोषी माना है। जैसे 'मन पंछी उड़ी उड़ी जाये' इस व्यंग्य निबंध में जनता की गलतियों को सामने रखते हुए जनमेजय जी ने लिखा है-"चुनाव में भी कितनी प्यारी प्यारी ममतामयी, शहदीली पुकार सुनाई पड़ती है,इसमें लूटकर भी आप होश में नहीं आते और पुनः लूटने को तैयार हो जाते हैं।"[6] साथ में लोगों में भ्रम पैदा करने के लिए बहुत सारे चुनावी तिकड़मबाजीयों का उपयोग किया जाता है। इसमें जाति और धर्म के आधार पर लोगों को भड़काया जाता है। हमारे देश में बहुत सारी राजनीतिक पार्टियाँ जाति और धर्म के आधार पर बनी हुई है। जिसके चलते हमारे नेतागण लोगों की प्राथमिक आवश्यकताओं को दरकिनार करके उनके विश्वास के साथ खेलने का काम कर रहे हैं। पार्टियों का टिकट भी पैसों के बलपर ही प्राप्त किया जा रहा है। हाई कमांड के साथ मिलीभगत करके ही पार्टी का टिकट प्राप्त किया जाता है। इस पर व्यंग्य करते हुए प्रेम जनमेजय जी लिखते हैं- "चुनाव जीतने के लिए किसी पार्टी का टिकट चाहिए होता है। टिकट हाई कमांड देता है। वह किसी ऐरे गैरे नत्थू खैरे को टिकट नहीं देता है। हाई कमांड तन मन और धन अर्पित करने वाले भक्त को टिकट देता है। हाई कमांड के हाथ में तराजू होता है जिसमें वह भक्तों के तन मन और धन को तौलता है।"[7] इस गंदी मानसिकता के चलते देश के राजनीतिक पार्टियों ने पूरे देश की व्यवस्था को तहस-नहस करके रखा है।

प्रजातंत्र के अंतर्गत सब के अधिकारों को अहमियत दी जाती है। लेकिन हमारे देश में नेता लोग प्रजातंत्र का इस्तेमाल गलत रूप में करते हुए दिखाई दे

रहे हैं। आज प्रजातंत्र पूंजीवादी लोगों के इशारे पर चल रहा है। आम आदमी के अधिकार कागदी दस्तावेजों में सीमट चुके हैं। लोगों का शासन हमें केवल चुनावी माहौल में ही नजर आता है।प्रजातंत्र में हमारे जनसेवकों का आचरण नियमों के विरुद्ध दिखाई देने लगा है। कोई आम इंसान इन परिस्थितियों को बदलने के लिए यदि कोशिश करता है तो उसकी आवाज विविध तरकीबों से बंद कर दी जाती है। इस बात को लेकर अत्यंत कठोर शब्दों में व्यंग्य करते हुए जनमेजय जी ' चिंकारा होने की आजादी' इस व्यंग्य निबंध में लिखते हैं-" सब जानते हैं कि हमारे देश में प्रजातंत्र है। सब जानते हैं कि प्रजातंत्र में सभी को मुँह खोलने का अधिकार है। पर बहुत कम जानते होंगे कि खुले मुँहों को बंद करने का सर्वाधिकार कुछ लोगों के पास सुरक्षित है। आप किसी भी चैनल में बहस सुन ले, अखबार पढ़ ले पता चल जाएगा कि आप चारों ओर से मुँह बंद करने वालों से घिरे हुए हैं। प्रजातंत्र में आप मुँह खोलने को स्वतंत्र हैं तो आपका मुँह बंद करने वाले भी स्वतंत्र है।"[8] इस तरह हम देखते हैं कि हमारे देश में प्रजातंत्र एक हंसी मजाक का विषय बन चुका है। प्रजातंत्र की जगह वास्तव में अप्रत्यक्ष रूप में शासन तंत्र ही चल रहा है। जिसमें हमारे नेतावर्ग जनता को लूटने के लिए हर समय प्रयासरत रहते हैं। ऐसे नेताओं पर करारा व्यंग्य करते हुए जनमेजय जी लिखते हैं-" प्रजातंत्र में हर मच्छर रक्तपिपासु होता है। साले रक्त तो पीते हैं हमारी बोटी भी खाते हैं। पर प्यारे कुछ भी कहो, नाम बड़ा मस्त है- चिकनगुनिया। लगता है साली कुछ खाती- पीती बीमारी है।"[9] यहां पर रचनाकार ने प्रजातंत्र में दिन-ब-दिन बढ़ते विकृतियों का पर्दाफाश करने की कोशिश की है। इसके साथ ही व्यंग्यकार ने सरकारे केवल सत्ता के लिए होते हैं, यह बात जनता के सामने प्रस्तुत करने की कोशिश की है। आज सत्ता का गलत प्रयोग करके जनता के विविध अधिकारों को छीना जा रहा है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि प्रेम जनमेजय जी ने भ्रष्टाचार के सैनिक व्यंग्य रचना में राजनीतिक दुरावस्था को अपने व्यंग्य बाणों का निशाना बनाया है। उनके व्यंग्य सामान्य जनता को सोचने के लिए मजबूर कर देते हैं। जनमेजय जी राजनीतिक क्षेत्र में फैले दुर्बलताओं, कमजोरियों को व्यंग्य के माध्यम से दूर करना चाहते हैं।आम जनता के जीवन को बेहतर रूप में देखना चाहते हैं। नेताओं के भ्रष्टाचार और घोटालों के कारनामों के कारण देश अंदर से किस तरह खोखला बनता जा रहा है इस ओर हमारा ध्यान खींचने का काम में व्यंग्यकार ने किया है। राजनीतिक क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों के लिए जनता के अशिक्षा को भी जिम्मेदार माना है। रचनाकार ने व्यंग्य के सहारे पाठकों के सामने केवल समस्याओं का पहाड़ नहीं खड़ा किया है, तो अप्रत्यक्ष रूप में उन समस्याओं के निराकरण करने के उपाय भी बताए हैं। इस रचना के माध्यम से जनमेजय जी ने जनता के विचारों को एक अलग मोड देने की कोशिश की है।

संदर्भ ग्रंथ-

1) प्रेम जनमेजय,भ्रष्टाचार के सैनिक, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2017, पृष्ठ 22
2) वही, पृष्ठ 51
3) वही, पृष्ठ 69
4) भेरूंलाल गर्ग, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में सामाजिक परिवर्तन,चित्रलेखा प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 1983
5) वही, पृष्ठ 65
6) वही, पृष्ठ 52
7) वही, पृष्ठ 78
8) वही, पृष्ठ 23
9) वही, पृष्ठ 141